गोलालारीय समाज का मुखपत्र

श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास इन्दौर

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

मासिक
गोलालारीय दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

प्रतिभाशाली विशेषांक

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2015-2017 सेवा में,

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 7 अंक : 9 पृष्ठ संख्या : 8 माह – 15 जुलाई 2016 सहयोग राशी – आजीवन सदस्य बनें ।

आपके अथक परिश्रम से समाज गौरवांवित हुआ -

पारस जैन, गंजबासौदा
प्रमिला अजय जैन
GATE परीक्षा में
आल इंडिया 69 रैंक

प्रांजल जैन, गंजबासौदा
अनीता प्रणय जैन 12वीं – 83.4%
बोर्ड–पीसीएम JEE Mains में 193
Advance परीक्षा में 4511 रैंक

रिया जैन, ललितपुर
सुधा अशोक जैन, 12वीं – 93.8%
बोर्ड–पीसीएम
विदिशा जिले में प्रथम

आकृति जैन, बुलंदशहर
ज्योति पुष्पदंत जैन
12वीं – 93.8%
सीबीएसई–बायोलॉजी

हम साथ साथ हैं -

हमारे नौनिहालों ने चूम लिया सफलता का शिखर । इन होनहार बालक, बालिकाओं ने जिन ऊंचाईयों को छुआ है वो न केवल माता पिता और उनके परिवार के लिए प्रसन्नता का अवसर है वरन् पूरा जैन समाज भी गौरवान्वित हुआ है । इस सफलता के लिए गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से सभी को अनेक शुभकामनाएं और बधाईयां । ये सच है कि बच्चों के लिए यह सफलता उनकी मंजिल नहीं वरन् एक पड़ाव है, जीवन का एक सुखद मोड़ है, जहां कुछ देर सफलता रूपी छाया में विश्राम कर सके । किन्तु आगे की एक लम्बी और कठिन यात्रा पर उन्हें चलते जाना है जब तक कि मंजिल नहीं मिल जाती ।

सफलता का यह सफर अत्यंत कठिन और चुनौतीपूर्ण होता है । पग पग पर नई नई समस्याएँ, परेशानियां सामने आती है । समय के साथ प्रतियोगिता भी बढ़ रही है, विभिन्न संस्थानों में प्रवेश के लिए कट आफ लिस्ट ऊंची होती जा रही है । हर संस्थान सर्वश्रेष्ठ का चुनाव चाहता है, लिहाजा विद्यार्थियों का लक्ष्य कठिन से कठिनतर होता जा रहा है, संघर्ष भी उसी अनुपात में बढ़ रहा है । बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण करते ही हर छात्र देश के श्रेष्ठ शिक्षा संस्थान में उच्च अध्ययन करने का सपना देखने लगता है किन्तु ऐसे मुट्ठी भर संस्थानों में सीमित प्रवेश से विद्यार्थियों में संघर्ष बढ़ जाता है । प्रतिस्पर्धा के इस संघर्ष में बच्चे ही नहीं माता पिता और पूरा परिवार भी शामिल हो जाता है । हर तरह के प्रयास किये जाते है ताकि बच्चा सफल हो सके और इसीलिये ये सफलता किसी एक की नहीं वरन् पूरे परिवार की सफलता होती है ।

परीक्षा परिणाम आते ही सफल हुए बच्चों का यशगान, सम्मान होता है किन्तु सभी बच्चे सफल हो ये जरूरी नहीं । कुछेक सफल चेहरों के पीछे असफल भीड़ छुपी होती है । इनकी असफलता की अनेक वजह हो सकती हैं परन्तु मुख्य बात यह है कि यह परीक्षा जीवन की अंतिम परीक्षा नहीं जिसमें असफल होने से सबकुछ खत्म हो गया समझें, न ही यह जीवन से अधिक मूल्यवान है और न ही यह अंतिम अवसर है । सबसे जरुरी यह विचार करना है कि हमारा जीवन सबसे अधिक मूल्यवान है इसे हम किसी भी कीमत पर नहीं खो सकते । और अवसर तो हमेशा आते ही रहेंगे, शायद इससे भी अच्छा अवसर हमारी प्रतीक्षा कर रहा हो । तो क्यों न हम स्वयं को उसके लिए तैयार करें और पूरे दमखम से जुट जाएं अगली परीक्षा के लिए । बालक के इस कठिन समय में माता पिता और परिवार के अन्य लोग भी उसके साथ रहें, उसकी हौसला अफजाई करें, उसे निराशा के गर्त में डूबने से बचाएं, उसे अकेला न छोंड़े, हिम्मत दें, आगे बढ़ने की प्रेरणा दें तो यह कठिन समय आसानी से गुजर जायेगा । आने वाले समय में बच्चा दुगुने उत्साह से मेहनत कर अवश्य ही सफल होगा ।

एक बहुत आवश्यक बात माता पिता के लिए, कि बच्चों पर किसी प्रकार का दवाब न डाले । उन्हें स्वाभाविक रूप से पढ़ने दे । अपनी महत्वाकांक्षा बच्चों पर न लादे, न ही उन्हें रेस का घोड़ा समझकर दौड़ाने का प्रयास करें । बच्चे की रूचि और योग्यता के अनुसार करियर चुनने में उसकी मदद करें न कि आप उसका करियर स्वयं निश्चित करें । बच्चे की योग्यता के बारे में कोई गलतफहमी न रखें, उसकी क्षमताओं का सही आकलन करते हुए ही निर्णय करें । अन्य सफल बच्चे से ही उसकी तुलना कर ताना न दे । किसी विशेष विषय या करियर को लेकर बहुत अधिक उम्मीद न रखें । आजकल हर क्षेत्र में बहुत स्कोप है अत: किसी अंधी दौड़ में बच्चों को दौड़ने के लिए मजबूर न करें । अपनी रूचि का विषय चुनने पर बच्चा उस विषय को गंभीरता पूर्वक पढ़ेगा और इसका परिणाम भी उत्तम होगा । अपने बच्चों पर ध्यान दें, उनकी दिनचर्या पर नजर रखें । यदि किसी बात को लेकर वह परेशान है तो जानने का प्रयास करें । परीक्षाओं के समय सजग रहे और बच्चे की मानसिक स्थिति का निरीक्षण करते रहें । तनाव की स्थिति में बच्चे को अकेला न छोड़े । समय समय पर उसे एहसास कराते रहे कि आप हर परिस्थिति में बच्चे के साथ है ताकि वह पुन: अपने आप को संभाल सके और आगे बढ़ सके । माता पिता के लिए भी यह समझना जरूरी है कि स्कूल के ग्रेड या अंकों के लिए बच्चे पर अनावश्यक दवाब न डाले । बच्चे के भावी जीवन में यह इतने महत्वपूर्ण नहीं होते । आज हमारे पास कितने ही सफल लोगों के उदाहरण हैं जो अपने स्कूली जीवन में इतने सफल नहीं रहे किन्तु आगे जाकर बड़ी बड़ी सफलताएं अर्जित की । तात्पर्य यह कि यदि आज बच्चा अच्छे ग्रेड्स या अंक प्राप्त नहीं कर पा रहा तो इससे उसे हमेशा के लिए असफल मान लेना सही नहीं है । जरूरत है कि आप ऐसे समय बच्चे के साथ रहे, उसे मानसिक संबल दे, आश्वस्त करें कि हर परिस्थिति में आप उसके साथ हैं । आपके लिए अपना बच्चा किसी सफलता–असफलता से ज्यादा मूल्यवान है । उसे हम किसी भी कीमत पर खो नहीं सकते, तभी हम अपने बच्चों में आत्मविश्वास भर सकेंगे जो कि सफलता की कुंजी है । तो आईये सफलता का जश्न मनाते हुए सभी बच्चों को प्रोत्साहित करते हैं ताकि हम सब मिलकर आगे बढ़े और सफलता का परचम लहराएँ ।

– अनुपमा जैन, सहसंपादिका

इन्दौर, मालवा व निमाड़ की पारिवारिक निर्देशिका 'प्रयास' के प्रकाशन का कार्य अंतिम दौर में पहुंच गया है । आपके द्वारा भरी गयी जानकारी का प्रूफ डाक द्वारा आपको प्रेषित किया जा चुका है । यदि उसमें कोई त्रुटि है तो उसे सही कर 31 जुलाई 2016 तक समाज कार्यालय पर शीघ्र भेजें । जिन परिवारों ने अभी तक जानकारी नहीं दी है उनके लिए पारिवारिक जानकारी देने का अंतिम समय 31 जुलाई 2016 रहेगा । जानकारी के अभाव में पूर्व जानकारी के साथ पत्रिका में प्रकाशन किया जावेगा ।

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है । संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है ।